रूहाँ

सहज अवतार महाराज दर्शन दास जी

No part of this publication may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or any information storage and retrieval system now known or to be invented, without permission in writing from the publisher, except by a reviewer who wishes to quote brief passages in connection with a review written for inclusion in a magazine, newspaper or broadcast.

Published in India by Prowess Publishing
YRK Towers, Thadikara Swamy Koil St, Alandur, Chennai,
Tamil Nadu 600016

ISBN-10: 1-5457-4311-8
ISBN-13: 978-1-5457-4311-9

Library of Congress Cataloging in Publication

अनुक्रमाणिका

1.	प्रस्तावना	1
2.	दीनु बिसारिओ रे दिवाने, दीनु बिसारिओ रे।। पेटु भरिओ पसूआ जिउ सोइओ, मनुखु जनमु है हारिओ।। 1।। रहाउ	3
3.	गुर जेवडु गुर जेवडु दाता, मै अवरु न कोई राम।। हरि दानो हरि दानु देवै, हरि पुरखु निरंजनु सोई राम।।	12
4.	किउ जीवनु प्रीतम बिनु माई।। जा के बिछुरत होत मिरतका, ग्रिह महि रहनु न पाई।। 1।। रहाउ।।	21
5.	सुइने का चउका कंचन कुआर।। रुपे कीआ कारा बहुतु बिसथारु।।	35

6. जेते जतन करत ते डूबे,

भव सागरु नही तारिओ रे।। 46

7. अंम्रित बचन साध की बाणी।।

जो जो जपै तिस की गति होवै,

हरि हरि नामु

नित रसन बखानी।। 1।। रहाउ।। 59

8. एकु सुआनु दुइ सुआनी नालि।।

भलके भउकहि सदा बइआलि।। 73

9. माई मेरे मन की प्रीति।

एही करम धरम जप एही,

राम नाम निरमल है रीति।। रहाउ।। 87

10. नैनहु नीद पर द्रिसटि विकार।।

स्रवण सोए सुणि निंद वीचार।।

रसना सोई लोभि मीठै सादि।।

मनु सोइआ माइआ बिसमादि।। 1।। 101

11. झिमि झिमे झिमि झिमि वरसै

अंम्रित धारा राम।। 112

12. भादुइ भरमि भुलाणीआ,
दूजै लगा हेतु।।
लखं सीगार बणाइआ,
कारजि नाही केतु।। 132

13. ऐसी प्रीति गोविंद सिउ लागी।।
मेलि लए पूरन वडभागी।। 1।। रहाउ।। 145

14. मनहु न नामु विसारि,
अहिनिसि धिआईऐ।
जिउ राखहि किरपा धारि,
तिवै सुखु पाईऐ।। 161

15. हरि हरि जपहु पिआरिआ,
गुरमति ले हरि बोलि।।
मनु सच कसवटी लाईऐ,
तुलीऐ पूरै तोलि।। 173

प्रस्तावना

मैं ता जाणा एको दाता जिस एह उमत सजाई
न मैं जाणा हिन्दु सिक्ख न मोमन ईसाई॥

सहज अवतार महाराज दर्शन दास जी

❋❋❋

पूर्ण संत, महापुरूषों का सन्देश सम्पूर्ण मानव जाति के लिए होता है। मजहब-कौम, जात-पात में बंटी मानव जाति को एक "प्रेम" के सूत्र में पिरोने का होता है आपसी मतभेदों झगड़े-फसादों से ऊपर उठकर "मानवता" के दायरे में आने के लिए होता है। आपसी सांझ पैदा करने का होता है क्योंकि मनुष्य आत्मिक तौर पर उस परम-पिता परमेश्वर की सन्तान है। "आत्मा' परमात्मा की "अंश" है और सभी मनुष्यों में परमात्मा ने अपना अंश "आत्मा" समान रूप से रखी है। धरती पर आकर मनुष्य मन के, काल के आधीन होकर अलग-अलग दायरों में, मजहब-कौमों, जात-पात, में बंट चुका है और सभी मनुष्य स्वयं को एक-दूसरे से अलग और श्रेष्ठ मानते हैं। ऊंचा और बुद्धिमान मानते हैं कि मेरा मजहब, मेरी कौम, मेरी जाति दूसरे मनुष्यों से ऊँची है और मेरा परमात्मा, मेरा भगवान भी अलग व श्रेष्ठ है। जबकि संत-महात्माओं का कथन है कि परमात्मा एक है और समय-समय पर, आवश्यकतानुसार भिन्न-भिन्न रूप लेकर धरती पर प्रकट हुआ और मानव जाति को समय के अनुरूप सन्देश दिया। मानव-मानव में उसने कभी भिन्न-भेद नहीं किया और न ही बांटा है। इसी प्रकार "सहज अवतार महाराज दर्शन दास जी" ने भी एक ही "परमात्मा" का सन्देश जीवों को दिया है कि मैं तो केवल एक ही "परमात्मा" को जानता हूँ। जिसने यह कुल-कायनात बनाई है। सारी सृष्टि की रचना की है चौरासी लाख योनियां बनाई हैं, ऋषि-मुनि, संत-महात्मा, महापुरूषों का जन्म दाता भी वह स्वयं ही है। उसने "मनुष्य" को, "मानवता" को बनाया है कभी कोई हिन्दु, सिक्ख, मुसलमान या ईसाई नहीं बनाया। यह सब जात-पात, मजहब-कौम, मनुष्य की अपनी

उपज है। मैं इन्हें नहीं जानता। यह सब पराई सोचें हैं मैं तो केवल "मानवता" को जानता हूँ। मेरे लिए सब उस परमात्मा की सन्तानें हैं। इसी कारण मेरा सन्देश भी पूरी मानव जाति के लिए है। किसी एक मजहब-कौम या जाति के लिए नहीं। जो सन्देश मुझे उस "परम-पिता, परमात्मा ने देकर इस धरती पर भेजा है, वह है आपसी प्रेम, आपसी सांझ, एकता, भाईचारा।

महाराज दर्शन दास जी अपने सत्संगों में मुख्यतः यही सन्देश जीवों को दिया करते थे कि आपसी मतभेदों से ऊपर उठकर "मानवता के दायरे में आयें। सबसे पहले हम एक इन्सान हैं और हम सबका "धर्म" एक ही है वह है "सत, संतोख, दया, नाम"। मजहब हमारा कोई भी हो सकता है। हम सब जीव अपने इस धर्म को भूल गए हैं और अपने हकों की खातिर धरने दे रहे हैं आपस में लड़ाई-झगड़े कर रहे हैं जो कि उचित नहीं है। जो मानवता के, हमारे विनाश का कारण बन सकता है। हम सब जीव उस "परमात्मा" के दास बन कर मानवता की सेवा में जुट जाएं क्योंकि हम उस "एक" परमात्मा की सन्तान हैं और आपस में भाई-भाई हैं। हम सब का "परमात्मा" को याद करने का तरीका, उपासना करने का तरीका अलग हो सकता है लेकिन हमारी मंजिल "एक" है।

महाराज दर्शन दास जी के इसी मुख्य सन्देश को ब्यान करते उनके कुछ सत्संग इस पुस्तक में प्रकाशित किए जा रहे हैं। आशा करते हैं कि सभी जीव गुरू साहब के इन सत्संगों से प्रेरणा प्राप्त करके, "मानवता" के दायरे में आकर अपने जीवन को सार्थक बनाने का प्रयत्न अवश्य करेंगे, मजहबों-कौम के दायरे से ऊपर उठकर आपसी प्रेम और भाईचारा स्थापित कर, देश में, विश्व में शांति स्थापित करने में अपना योगदान देंगे।

प्रकाशन विभाग
सतगुरू दर्शन धाम।

मुखवाक्

मारू कबीर जीउ

दीनु बिसारिओ रे दिवाने,
दीनु बिसारिओ रे॥
पेटु भरिओ पसूआ जिउ सोइओ,
मनुखु जनमु है हारिओ॥ 1॥ रहाउ॥
साधसंगति कबहू नही कीनी,
रचिओ धंधै झूठ॥
सुआन सूकर बाइस जिवै,
भटकतु चालिओ ऊठि॥ 1॥
आपस कउ दीरधु करि जानै,
अउरन कउ लग मात॥
मनसा बाचा करमना,
मै देखे दोजक जात॥ 2॥
कामी क्रोधी चातुरी, बाजीगर बेकाम॥
निंदा करते जनमु सिरानो,
कबहू न सिमरिओ रामु॥ 3॥
कहि कबीर चेतै नही,
मूरखु मुगधु गवारु॥
रामु नामु जानिओ नही,
कैसे उतरसि पारि॥ 4॥ 1॥

श्री गुरू ग्रंथ-साहब पृष्ठ 1105-06

***

नानक नाम चढ़दी कला,
तेरे भाणे सरबत दा भला॥

यह वाणी भगत कबीर साहब की है भक्त कबीर साहब हमारी इस मनुष्य योनि को बहुत ही प्यार के साथ समझाते हैं कि हे मनुष्य, तू उस दाते को भूल कर पशुओं की तरह अपना पेट भर कर सो जाता है यह जन्म जो परमात्मा ने अपने प्यार और शक्ति से बख्शिश किया है इसे तू बेमूल्य ही गँवा देता है। यह तेरी बेसमझी और कम अकली है। तूं उसको न विसार, जिसने तुझे यह सारे सुख और आराम दिए हैं। जिसके साथ तेरे नाम की रोशनी है, प्रकाश है, नूर है, महिमा है, वडियाई है, यदि तू उस को ही गँवा बैठा तो तेरा यह जन्म बेकार और व्यर्थ चला जाएगा। उस समय तूं पछतायेगा जब तेरा अंत समय आएगा। यमों ने तुझे लेने के लिए आना है उस समय तूंने रोना है, चिल्लाना है, कलपना है। लेकिन उन्होंने तुझे बख्शना नहीं है और छोड़ना भी नहीं है। इस कारण कबीर साहब फरमान करते हैं कि:-

कबीर लूटना है त लूटि लै, राम नाम है लूटि॥
फिरि पाछै पछुताहुगे प्रान जाहिंगे छूटि॥

आदि ग्रंथ-पृष्ठ-1366

❋❋❋

हे मनुष्य, यदि तूं कुछ लूटना चाहता है या कमाना चाहता है या पाना चाहता है तो तूं "राम" नाम प्राप्त करके उसकी कमाई कर। उसके साथ तेरा यह जन्म सुधर सकता है। दुनिया के और जितने भी कारज हैं, काम-धन्धे हैं वह तेरे चन्द घड़ियों के लिए हैं सदा के लिए नहीं हैं। तुझे जो सुख शांति और प्रसन्नता चाहिए, वह पिता-परमात्मा के बिना या "नाम" के बिना तुझे हरगिज हासिल नहीं हो सकती।

करम धरम पाखंड जो दीसहि,
तिन जमु जागाती लूटै॥
निरबाण कीरतनु गावहु करते का,
निमख सिमरत जितु छूटै॥

आदि ग्रंथ पृष्ठ-(747-48)

❋❋❋

गुरू अर्जुन साहिब फरमान कर रहे हैं कि जो कर्म धर्म है यह हमारा पाखंड नहीं बल्कि सच्ची कमाई है। हम निरबान हो कर उस परमात्मा का यशगान करें, कीर्तन करें, महिमा करें या नाम सिमरन करें तब हमें इस योनि के अन्दर वह खुशी, वह आनन्द हासिल हो सकता है और किसी भी प्रकार नहीं।

कोटि तीरथ मजन इसनाना,
इसु कलि महि मैलु भरीजै॥
साधसंगि जो हरि गुण गावै,
सो निरमलु करि लीजै॥

आदि ग्रंथ-पृष्ठ-747-48

❋❋❋

करोड़ों साधनाओं और तीर्थों के स्नान करने के बावजूद भी हमारी अन्दर की मैल साफ नहीं होती, बाहरी तन की मैल धुलती है। यदि हम अन्दर की मैल को धोना चाहते हैं तो उसे धोने के लिए केवल एक ही साधन है, एक ही रास्ता है, कि आप परमात्मा की बनाई हुई खलकत के साथ प्रेम करो और उसको याद रख कर उसका ध्यान और सिमरन करो, जिसके साथ हमारे अन्दर की मैल और शराबों-कबाबों का कूड़ा सदा के लिए समाप्त हो जाए।

बेद कतेब सिम्रिति सभि सासत,
इन्ह पड़िआ मुकति न होई॥
एकु अखरु जो गुरमुखि जापै,
तिस की निरमल सोई॥

आदि ग्रंथ-पृष्ठ-747-48

❋❋❋

साहिब फिर यही फरमान कर रहे हैं कि आप वेदों-कतेबों के जितने मर्जी पाठ कर लो, ध्यान कर लो, कंठस्थ कर लो, आपको इससे खलासी नहीं मिल सकती, भाव मुक्ति हासिल नहीं हो सकती। यदि आप मुक्ति हासिल करना चाहते हैं तो आप वह चीज हासिल करो जिससे आपको मुक्ति मिल सके। वह केवल "राम" नाम है या "परमात्मा" की शरण

है। जब उसकी इच्छा के अनुसार हम कोई भी कार्य करते हैं तो हमें हमेशा ही उसमें से प्रसन्नता और शांति मिलती है। जब हम अपनी इच्छा के अनुसार कोई भी कार्य करते हैं तो हमें जो खुशी और शांति मिलती है वह चंद घड़ियों के लिये मिलती है। वह सदा के लिए नहीं है। कोई भी महापुरूष, पूर्ण पुरूष हमें इस दलदल में फँसाने के लिए नहीं आता, बल्कि हमें इस दलदल में से निकालने के लिए आता है। हमने पहले भी अपने सत्संगों में अर्ज किया है कि आपके जितने भी साधन परमात्मा को मिलने के, परमात्मा को पाने के हैं, वह साधन आपके लिये जरूरी है लेकिन उनमें से सब से जरूरी साधन उसको याद करना, उसका ध्यान करना, उसका सिमरन करना है जिसके द्वारा आपको यहाँ से खलासी, मुक्ति मिल सकेगी। हमने साउथ हाल के एक सत्संग में अर्ज किया था कि धरती पर कोई भी पैगम्बर, नबी, अवतार, पूर्ण पुरख या नामी पुरख आपको झगड़े-फसादों में डालने के लिए नहीं आता। जात-पात में उलझाने के लिए नहीं आता बल्कि आपको इस मात-गर्भ की नौ महीनों की सजा से आपको निकालने के लिए आता है। जब आप उसमें से निकल गए तो आपको अपने आप मुक्ति और खलासी मिल गई। जिस प्रकार महाराज जी ने फरमान किया है किः-

सतिगुर की सेवा सफलु है,
जे को करे चितु लाइ॥
मनि चिंदिआ फलु पावणा,
हउमै विचहु जाइ॥

आदि ग्रंथ-पृष्ठ-644

***

जब आप सतगुरू की सेवा में जुट जाओगे, जुड़ जाओगे तब आपके अन्दर से अहंकार का रोग भी समाप्त हो जाएगा और आपके जो मनोरथ हैं, मुरादें हैं, वह भी पूरी हो जाएंगी। वह मुरादें, वह मनोरथ आपके परमार्थक और आध्यात्मिक होने चाहिए, स्वार्थ के नहीं। स्वार्थ के भाव दुनियादारी के आपके जो भी मनोरथ हैं वह सारे परमात्मा ने आपके जन्म के साथ, आपके "कर्म" बना कर भेजे होते हैं। जो "कर्म" आप भोगने के लिए आते हैं, उन में से निकालने के लिए संत महात्मा अपनी "सांझ", अपना प्यार और अपना सच्चा, अजर अमर "नाम" आपको देते हैं। उसके द्वारा आप अपने जीवन को ऊँचा, सुच्चा और महान बना सकते हैं। कल भी हमने सत्संग में कहा था और एडमिन्टन सत्संग में भी

अर्ज की थी कि संत "परमात्मा" का घर लूटते हैं, आपके घर भरते हैं। आप लोगों के घर लूटते हैं और अपने घर भरते हैं कभी भी आपने किसी और का घर नहीं भरा। संत क्या लूटते हैं? "राम नाम" और आपके घर किससे भरते हैं? "राम नाम" से। आप क्या लूटते हैं? दुनिया की माया, दुनिया की झूठी वस्तुएं और अपने घर भर कर दूसरों के घर खाली करते हैं। बुल्लेशाह भी ब्यान करते हैं:-

बुल्लआ पी शराब ते खा कबाब,
हेठ बल हड्डां दी अग्ग।
चोरी कर ते भन्न घर रब्ब दा,
ओस ठग्गां दे ठग्ग नूं ठग्ग॥

सांई बुल्लेशाह

***

बुल्लेया, तूं परमात्मा के घर को लूट, जिससे जीवात्मा का यह शरीर रूपी घर भरपूर हो और सदा के लिए वह आनन्दमयी जीवन गुजार सके।

खत्री ब्राहमण सूद वैस,
उपदेसु चहु वरना कउ साझा॥
गुरमुखि नामु जपै उधरै सो,
कलि महि घटि घटि नानक माझा॥

आदि ग्रंथ-पृष्ठ-747-48

***

साहिब आगे फरमान कर रहे हैं कि जो हमारे चार वर्ण हैं ब्राह्मण, क्षत्रीय, वैष्य, शूद्र, इनमें एक ही सांझ है उसे हम "साध-संगत" कहते हैं। उस सांझ में हमारा जो कर्म कमाने का तरीका, साधना, परमात्मा का नाम है और उसके बनाए हुए लोगों के साथ हमें प्यार और बाँट कर खाने का जो सुझाव दिया जाता है या समझाया जाता है उसके बारे में साहिब फरमान कर रहे हैं। हमने भी कई बार सत्संगों में अर्ज की है कि आप जो कुछ भी करते हैं अपने लिए करते हैं, किसी दूसरे के लिए कर के देखो, फिर आपको कितना आनन्द आयेगा। यह ठीक है कि आप अपने लिए करके, स्वयं ही खाकर, अपना पेट

भर लिया, खा लिया, सो लिया, उठ लिया और काम कर लिया। आपको अपनी चीजों का इतना फिक्र रहता है। उसके अन्दर आप इतने लीन हो जाते हैं कि अपको दुनिया का कोई भी बुरे से बुरा कर्म करना पड़ जाए आप कभी भी डोलते और घबराते नहीं हैं। जब आपने कोई अच्छा कार्य करना हो, अच्छी राह पर चलना हो या किसी के लिए करना हो, तब आप डोलते भी हैं, घबराते भी हैं, डरते भी हैं और काम करने में असमर्थ हो जाते हैं। जैसे हमने पिछले सत्संग में अर्ज की थी कि "खुदा आपका खौफ नहीं है, आपकी खुशी है।" यदि आप कहें कि आपका खौफ है, हम डरते हैं, हमें डर लगता है, तो आपको डर अपनी करतूतों, अपने बुरे कामों का, अपनी गलतियों का, भूलों का लगता है। "परमात्मा ने आज तक न तो किसी को डराया है, न ही परमात्मा किसी को डराता है।" न ही उसके भेजे हुए किसी नबी, पैगम्बर ने किसी को आज तक धमकी दी है कि मैं तुम्हारा यह कर दूंगा, वह कर दूंगा। जितने भी दु:ख, मुश्किलें, कठिनाईयां, मुसीबतें आपको आती हैं, वह आपकी अपनी कमजोरियों, कायरता के द्वारा आती हैं। समझदारी के द्वारा नहीं, स्याणप के द्वारा नहीं। हम एक छोटी सी मिसाल देते हैं कि जब कोई बुरे दिन आने होते हैं, तब इन्सान की बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है। उसके पास अच्छी जगह पर बैठने का, अच्छे रास्ते पर जाने का समय नहीं होता, यह उसकी शुरूवात है। जब अच्छे दिन आने वाले होते हैं या सुख आने वाला होता है, तब हमें कठिनाईयां आनी शुरू हो जाती हैं। उन मुश्किलों में से हमें कोई अच्छा रास्ता मिलता है। जब अच्छी ओर से बुरी ओर जाना है तब हमारी बुद्धि मलिन हो जाती है। कई बार मिसाल दी जाती है कि आप स्वयं को सँवारने के लिये, समझने के लिये, कोई रास्ता ढूँढ सकते हैं तो वह आप ढूँढो, यह जरूरी है। आप किसी भी पुरातन काल की तारीख को देखें, जब भी आदमी के ऊपर अच्छे दिन आते हैं, वह automatically ही परमात्मा के हर कार्य को विसार बैठता है। कोई काम करने में उसका मन ही नहीं लगता। उसे चैन ही नहीं मिलता, वह दोनों तरफ ही भटकना शुरू कर देता है। तब उस पर जो बुरे दिन आते हैं उस में से उसे कोई भी नहीं निकाल सकता, चाहे कोई उसका मुर्शिद भी हो, या स्वयं परमात्मा भी हो, चाहे वह स्वयं भी कितना बड़ा, अच्छा व्यक्ति हो। बेहतर यही है कि यदि एक बार हमारे ऊपर बुरे दिन थे, हम दु:खी थे, उनमें से हमें किसी ओट-आसरे के द्वारा सुख या सहारा मिला और हमने सुख या वडियाई, ऊँचापन हासिल किया है हम उसे कभी भी न गँवाएं जिसके द्वारा हमें सदा के लिए प्रसन्नता और आनन्द मिलता हो। हम लोगों में, जिज्ञासु जीवों में पुरातन समय से लेकर आज तक यह रस्म या रीत चली आ रही है

कि बुरी बुद्धि बन जाती है। बुरे ख्याल बन जाते हैं और बुरी बुद्धि और बुरे विचारों के कारण हमारे ऊपर बुरे दिन आ जाते हैं। कोई किसी के बुरे दिन नहीं लाता। परमात्मा ने कभी आपका बुरा नहीं किया है और न ही कभी बुरा करेगा। हमने अपनी एक किताब में लिखवाया है कि, "खुदा तुम्हारा हबीब है, रकीब नहीं।" आपका मित्र है, दुश्मन नहीं है। यदि आप उसे दुश्मन समझते हैं तो आपको रावण, कंस और हिरण्यकशिपु की ओर देखना चाहिए उन्होंने परमात्मा को अपना दुश्मन समझा, और लोगों पर जुल्म, अत्याचार किया, बुरा-भला कहा। जो आदमी स्वयं को अच्छा और सुखी समझता है, उससे बड़ा कोई और दु:खी इन्सान नहीं है। उसे कोई नहीं जानता, उसे कोई नहीं पूछता, कोई नहीं देखता। उसको वही जानता है जिसके साथ उसका उठना-बैठना है, आना-जाना है। जिस आदमी को सुख है, खुशी है, आनन्द है, उसे चार कुंट जानते हैं, जिसे हम रब्बी नूर, रब्बी प्रकाश कहते हैं। जैसा कि महाराज जी ने फरमान किया है कि यदि आपने वर्णों में ही अपना ऊँचापन रखना है तो आप रखते रहें, उसका आपको कोई लाभ नहीं होगा, न ही परमात्मा को आपका कोई लाभ होता है। जैसे हम कई बार कहते हैं कि जो भी भक्तियां, दान-पुण्य आप करते हैं, उसका परमात्मा को कोई लाभ नहीं है, न ही कभी आपको होगा। पिछले सत्संग में हमने अर्ज की थी कि परमात्मा आपके ऊपर "दया" करता है, और "नाम" दान देता है। आप दान करते हो, गिनते हो और दण्ड भरते हो। जब दण्ड भरते हो तब आपको मुश्किल भी होती है, कलपते भी हो, दान करके गिनते भी हो, कि अब यह मैंने नहीं करना। हमें यह नहीं पता कि उसका, एक-एक वस्तु का हमें क्या-क्या मिला है? जिसका हम कभी भी ख्याल नहीं कर पाए थे, उसमें हमने कभी भी परमात्मा की रहमत को नहीं समझा, कभी नहीं जाना। हम हमेशा ही अपनी जानवर जैसी चतुराई, जानवर जैसी चालाकी करते हैं। जानवर की तरह हमारी बुद्धि पलीत हो जाती है और हम लोग अपना जन्म बेमुल्य बरबाद कर देते हैं।

धाइ धाइ क्रिपन स्रमु कीनो,
इकत्र करी है माइआ॥
दानु पुंनु नही संतन सेवा,
कित ही काजि न आइआ॥

आदि ग्रंथ-पृष्ठ-712

***

हम ऊपर अर्ज कर चुके हैं, साहब भी यही फरमान कर रहे हैं कि इससे आगे हमारा जो अगला मसला है, हमारा आखिर का असली रस है हम उस चीज को समझ जाते हैं, तो हमारी सब जरूरतें और इच्छाएं जो हैं वह खत्म हो जाती हैं। उसमें हमें एक ऐसा स्वरूप, ऐसा रूप, ऐसी साधना मिल जाती है जो हमारी जन्मों-जन्मों की मैल धो देती है। वह साधना एक ही है कि "आत्मा और परमात्मा।" "परमात्मा" मालिक है और "आत्मा" उसकी दास है। नौकर है या उसकी दासी है या उसकी सेवादार है या उसकी पत्नी रूप में, जैसे गुरू नानक साहब ने याद किया है कि आत्मा उसकी पत्नी है और परमात्मा उसका पति है। इससे बड़ा मात-पिता का रिश्ता है, जैसे मोहम्मद साहब ने कहा है कि वह मेरी सास है, मैं उसकी बहू हूँ। जीसस क्राइस्ट ने कहा है कि वह मेरा पिता है, मैं उसका बेटा हूँ। किसी ने उसको भगवान कहा है और स्वयं को उसका भक्त कहा है। इसलिए उसको "सतगुरू" कहा है। स्वयं को "गुरसिख" भी कहा है। जितने भी हमारे नाते हैं, रिश्ते हैं, यह मन भाते हैं, अपनी खुशी के हैं, बन्दिश के नहीं, दबाव के नहीं। किसी मुश्किल के नहीं हैं, बिल्कुल सरल, आसान, और मीठे हैं। आप चाहें तो इन्हें सँवार सकते हैं, चाहें तो इन्हें बिगाड़ सकते हैं। दुनिया के दुःखों और मुश्किलों से जब आप टूट जाते हैं, तब आप कोई सच्चा-सुच्चा सहारा ढूँढते हैं। तब परमात्मा अपनी मेहर करता है। बख्शिश करता है। आपकी मेहनत, पाठ-पूजा पर दयाल होकर आपको कोई नेक या पूर्ण पुरख मिला देता है। यदि आप उससे टूट जाते हैं या आप पीछे हट जाते हैं, तो फिर दुनिया की कोई ताकत नहीं है जो आपको दोबारा कहीं पर खड़ा कर सके। आपको वह समय तब याद आयेगा जब अंत समय आयेगा। आपका कोई साथी नहीं होगा। मुर्शिद भी आपको नहीं निकाल सकेगा। आपने स्वयं को कीचड़ में इतना लिप्त कर लिया होता है कि आपको वह हमेशा ही सहन करना पड़ता है। फिर चाहे मूलचंद खत्री की तरह खरगोश बनना पड़े, चीता, कुत्ता बनना पड़े। जिस जामें में से मुर्शिद को स्वंय जन्म लेकर आपको निकालना पड़े, लेकिन आपको एक बार उस चीज का एहसास करना पड़ता है। यदि आप जीवित रहते देखें, आप अपने परमात्मा से दूर हो जाओ? वैसे हम सब उससे काफी दूर हैं परमात्मा पता नहीं कहाँ है। यदि हमारे अन्दर उसकी याद है, हमारे अन्दर उसका वास है, उसके बीच में कोई पर्दा आ जाए, रूकावट आ जाए तो आप स्वयं देखें कि आपकी सोचें कहाँ चली जाती हैं। अकेले बैठ कर देख लें, हमेशा ही आप बुरी सोच सोचेंगे। बुरे विचार करेंगे। ऐसी खुराकें खानी शुरू कर देंगे जिससे आपका यह शरीर इतना सुन्न हो जाएगा, कि इसमें आलसपन आ जाएगा। जब आपने दुनिया की चुगली करनी हो, निंदा करनी हो, कोई और ऐसा कर्म करना हो, न रात, न दिन, न बादल,

न आँधी, आपको कुछ नजर नहीं आता, भागते जाना है, करते रहना है। क्या इन में से आपको कुछ मिलता है? जब परमात्मा की बात होती है, तब आपके पास सब कुछ होता है लेकिन आपको नजर नहीं आती। तब आपके शरीर भी दर्द करने लग जाएंगे, नींद भी नहीं खुलेगी, आपसे उठा भी नहीं जाएगा। आप कई बार सवाल भी कर देते हैं कि जी, सुबह उठा नहीं जाता। क्या करें? क्यों नहीं उठा जाता? क्योंकि वह चीज बहुत सुच्ची है। बहुत महान है। उसको कोई कायर या बुजदिल नहीं खा सकता। उसे खाने के लिए शूरवीर और बहादुर आदमी चाहिए। जिन्होंने अपना सिर तलियों पर रखा हुआ हो। सिर जोड़े जाते हैं, तोड़े नहीं जाते। सिर उठाये जाते हैं, झुकाये नहीं जाते। आप झुकाना जानते हो आप किसी को क्या उठाओगे? आपको किसी का क्या पता है? हमने आपको कल के सत्संग में भी कहा था कि आप लोगों ने मन्दिर, मसीतें क्या बनानी हैं? या उनकी क्या सफाई करनी है? आप अपने घरों का कूड़ा अभी तक साफ नहीं कर सके। आपने किसी का क्या बनाना है? पहले अपने घर तो बना लो। वह कूड़े आपसे साफ नहीं हुए, आपने दूसरों के कूड़े क्या साफ करने हैं? पहले अपने अन्दर की चीजें साफ करो। अपने झूठ को छोड़कर देखो। जैसे कल example दिया था कि कुत्ते को खीर खिला दो, वह भी बुरी है। कुत्ते को घी खिला दो, वह भी ठीक नहीं है। हालांकि खीर मीठी है, घी मीठा नहीं है। लेकिन उसके लिये दोनों चीजें जहर बन जाती हैं। इसी प्रकार हमारा मन रूपी कुत्ता है, यह झूठ खाता है। यह झूठ ही बोलता है, और झूठ की ही बोली समझता है। न "सच" कभी इसने खाया है न ही "सच" कभी इसने बोला है। कई बार explain किया है कि इसको प्यार के साथ भी और जोर के साथ भी दबा सकते हो। यदि प्यार से मान जाए तो बहुत खुशी की बात है। दूसरी तरह मानेगा तो बहुत ही कमजोरी है। जिस प्रकार मर्जी मनाओ लेकिन यह आपका ही "मन" है।

मनि चिंदिआ फलु पावणा हउमै विचहु जाइ॥

आदि ग्रंथ–पृष्ठ–644

❋❋❋

मन चाहा फल आप तभी पाओगे जब अहंकार को छोड़ दोगे।

नानक नाम चढ़दी कला,

तेरे भाणे सरबत दा भला।

मुखवाक्

वडहंसु महला 4 छंत

गुर जेवडु गुर जेवडु दाता,
मै अवरु न कोई राम॥
हरि दानो हरि दानु देवै,
हरि पुरखु निरंजनु सोई राम॥
हरि हरि नामु जिनी आराधिआ,
तिन का दुखु भरमु भउ भागा॥
सेवक भाइ मिले वडभागी,
जिन गुर चरनी मनु लागा॥
कहु नानक हरि आपि मिलाए,
मिलि सतिगुर पुरखु सुखु होई॥
गुर जेवडु गुर जेवडु दाता,
मै अवरु न कोई॥ 4॥ 1॥

श्री गुरू ग्रंथ साहब पृष्ठ–572

❋❋❋

नानक नाम चढ़दी कला,
तेरे भाणे सरबत दा भला॥

यह वाणी गुरू राम दास जी महराज की है। साहिब, "राम" के बारे में फरमान करते हैं कि "राम" नाम को, उस पिता–परमात्मा के मिलाप के लिए, उस मालिक को सिमरने के लिए, हमें यह जानना जरूरी है कि किस "राम" की महिमा ब्यान की जा रही है। कबीर साहब चार "राम" की महिमा ब्यान करते हैं।

एक राम दशरथ घर डोलै॥
एक राम घट घट में बोलै॥
एक राम का सकल पसार
एक राम त्रिभुवन ते न्यारा॥

संत कबीर साहब

❋❋❋

पहले राम, त्रेता युग में आए, रावण के साथ युद्ध किया, लंका पर फतह प्राप्त करके अयोध्या में जाकर अपना राज–पाट संभाल लिया। दूसरा "राम" हमारा मन रूप राम, जो पल में यहाँ, पल में कहीं और नित नये अविश्कार सोचता है और मारा–मारा भटकता रहता है। जिसको हम त्रिकुटी का मालिक भी कहते हैं। तीसरे "ब्रह्मा" रूपी राम हैं जिसने सारी सृष्टि, सारी कायनात, सारी चौरासी लाख योनिआं, सारी दुनिया की रौनक, रोशनी, चाँद, सूर्य, तारे, हवा, मिट्टी, अग्नि, पानी, आकाश, और पुतले बनाए हैं। चौथे "राम" सिया रूपी राम, "सचखण्ड" वासी राम, जो हम सबके इस काया रूपी, देह रूपी, हरी मन्दिर के अन्दर बसता है। कबीर साहब जी राम की महिमा ब्यान करते हैं लेकिन गुरू राम दास जी महाराज अपने मुखवाक के अन्दर "गुरू" महिमा और दान के बारे में भी ब्यान करते हैं कि "गुरू" का दान धन दौलत, महल माड़ियां, झूठी और नाशवान वस्तुएं नहीं हैं, "गुरू" जिस को हम अपना "मुर्शिद" कहते हैं या वाणी के द्वारा परमात्मा स्वरूप भी जाना गया है या माना जाता है कि:–

गुरु परमेसरु एको जाणु,

आदि गंथ पृष्ठ-864

❋❋❋

उस गुरू को यदि आप कुछ दान करना चाहते हैं तो वह "तन" का, "धन" का और "मन" का भूखा नहीं है बल्कि आपके भजन, प्रेम, और सिमरन का भूखा है। आपसे कोई भी नाश्वान वस्तु लेकर आपका मुर्शिद कभी भी प्रसन्न नहीं होता। उसकी प्रसन्नता आपके "नाम" की कमाई से है। गुरू साहब कहते हैं कि हे जीवों, यदि आप अपने मुर्शिद की ओर से, अपने गुरू की ओर से खुशियां पाना चाहते हैं तो आपको "नाम" की कमाई करनी चाहिए। जो आपको आपका मुर्शिद अपने पास से दान करता है। दुनिया के जितने भी नाश्वान पदार्थ हैं जितनी भी नाशवान वस्तुएं हैं, सारी फ़ना हैं और सब ने एक दिन मिट्टी में मिल जाना है। साथ जाने के लिए यदि कोई दुनिया का सच्चा, ऊँचा, पक्का आपका कोई रिश्ता है, तो वह आपका मालिक है। आपका मुर्शिद है। आपके संत हैं, आपके स्वामी हैं। जिन्होंने आपका यह लोक और परलोक सँवारना है। दुनिया के जितने भी कारज, जितने भी संबंध, जितने भी रिश्ते, मेल-मिलाप हैं, वह चँद घड़ियों के लिये आपके बाहरी तौर पर खुशियां लेने के लिए हैं। आत्मा की प्रसन्न्ता, सदा का आनन्द, हमें केवल "नाम" में और "संत" शरण में मिल सकता है। जिस प्रकार बच्चा "आया" के पास खेलता हुआ, आया से खिलौने लेता है, उसकी मीठी, तोतली बातें सुनता है, और कुछ समय के लिये अपने मात-पिता को भूल जाता है, इसी प्रकार हम सब दुनिया के जीव इस "मन" रूपी आया के आधीन हैं, और इस दुनिया में हमारे जितने भी संबंध, रिश्ते हैं, खिलौनों के रूप में हैं जिन में पड़कर हम उस मालिक को भूल जाते हैं कभी-कभी इसमें सब कुछ करते हुए, रहते हुए, हमारे अन्दर उसको मिलने की तांघ, बेचैनी, पैदा होती है। वह खुशी, वह तांघ, वह मिलाप है, परमात्मा का। गुरू साहेबान ने हमें मुखवाक के द्वारा यही समझाया है कि आप अपने अन्दर मालिक को मिलने के लिए, या पाने के लिए यदि कोई साधना, कोई यत्न, कोशिश, तपस्या, भक्ति, दान-पुण्य, नितनेम करना चाहते हैं तो आप अपने मुर्शिद के द्वारा दिये गए "नाम" का सिमरन करो और उसकी बनाई हुई प्रजा के साथ, उसके बनाये हुए भक्त जनों के साथ प्रेम करो। जिससे अपने मालिक के और आत्मा के मिलाप में मुश्किलों और मुसीबतों में से निकलने के लिए आपको आसान रास्ता मिल सके।

अवर जतनि नही पाईऐ॥
वडै भागि हरि धिआईऐ॥
प्रभु क्रिपालु किरपा करै॥
नामु नानक साधू संगि मिलै॥

आदि ग्रंथ-पृष्ठ-211

❋❋❋

गुरू साहब फिर अपने उपदेश के द्वारा हम सबको समझा रहे हैं कि "नाम" भी साधु के संग ही मिलता है।

प्रभ का सिमरनु साध कै संगि॥
सरब निधान नानक हरि रंगि॥

आदि ग्रंथ-पृष्ठ-262

❋❋❋

अनेक यत्न करो, परमात्मा नहीं मिलता, घर-बार छोड़ दो, कारोबार छोड़ दो, बाल-बच्चे छोड़ दो, परमात्मा नहीं मिलेगा। यह हमारी कमजोरी, कायरता और मूर्खता है कि अपने घर-बार, परिवार छोड़कर, काम-काज छोड़कर, अपने बाल-बच्चे छोड़कर, दुनिया के संबंध और प्यार तोड़कर, हम परमात्मा को मिलना चाहते हैं, जंगलों, पहाड़ों में भटकते हैं, तीर्थों पर जाकर स्नान करते हैं और भी परमात्मा से मिलने के जो भी साधन हैं हम उन्हें अपनाते हैं, उसके साथ परमात्मा ने तो क्या मिलना है, हमारे अन्दर का अहंकार ही समाप्त नहीं होता, वह और बढ़ जाता है। "तमा" पैदा हो जाती है। यदि "साधु" मिल जाए, आपको "नाम" मिल जाए, फिर आपकी एक ही (नाम की) साधना है जिसे आप आराम से कर सकते हैं। इसलिए हमें अपने अन्दर अपने मालिक को तलाश करना चाहिए। हमें वेशभूषा में नहीं उलझना चाहिए।

जिस प्रकार दर्जी (tailor) कपड़े को काट कर कतरन कर देता है इसी प्रकार ही हमारा अंत समय यमों ने हमारा हाल करना है। जिन्होंने हमें लेने के लिए आना है। यदि हम इस यमों की फाही से, इस दु:ख भरे समय से आजादी चाहते हैं तो हमें किसी पूर्ण पुरख की शरण में जाकर "नाम" की प्राप्ति करनी चाहिए। जो वहाँ पहुँचा हुआ होगा, वही आपको

मिला सकता है। जो वहाँ स्वयं ही नहीं पहुँचा, वह आपको कैसे मिलाएगा? जिसने India, America, Canada की सैर ही नहीं की, वह आपको किस प्रकार वहाँ की सैर करवा सकता है? जो महापुरूष स्वयं ही परमात्मा से नहीं मिल सके, वह हमें कैसे मिलाएंगे? हम बहुत से लोग प्राचीन समय की बातों पर बहुत विश्वास करते हैं जिन के द्वारा हमारी आत्मा और मन में द्वन्द, भ्रम पैदा होता है। मन कहता है कि यह ठीक नहीं है। आत्मा कहती है कि यह ठीक है। आत्मा कहती है कि ठीक नहीं है, मन कहता है कि ठीक है। बहुत सारे विद्वान, बुद्धिजीवी, अपनी बुद्धि के साथ परमात्मा की तकसीम करके, छोटे–छोटे दायरों में बाँट कर, संतों द्वारा दिये गये ऊँचे, सुच्चे उपदेश को बाँट कर झगड़े–फसाद खड़े कर बैठते हैं। हम सब लोग इन सभी भ्रमों से तभी आजादी हासिल कर सकते हैं जब हमें कोई नामी पूर्ण पुरूष मिल जाएगा। परमात्मा को पाने के लिए हमने आप सबको सीधा और आसान तरीका सत्संगों के द्वारा कई बार ब्यान किया है। वह है, परमात्मा की बनाई हुई "खलकत" के साथ प्रेम करना। परमात्मा से मिलना चाहते हो तो परमात्मा के बंदों से प्रेम करो। "भगवद गीता" में श्री कृष्ण फरमान करते हैं कि "भगवान कुछ नहीं, एक इंसान है, जो महान है। भक्ति कुछ नहीं, एक शक्ति है। कर्म कुछ नहीं, एक कर्त्तव्य है। प्रेम कुछ नहीं, एक आनन्द है। यह आनन्द यदि आप प्राप्त करना चाहते हैं तो तुम्हें मुझ से, इन सबसे, और मेरे भक्त जनों से प्रेम करना होगा। क्योंकि न मैं धरती पर हूँ, न पाताल में हूँ, न आकाश में हूँ, न मेरा वास किसी और वस्तु में है। मेरा वास मेरे भक्त जनों के अन्दर है। उन्हें मिलने से ही मैं आपको मिल सकता हूँ।" हालाँकि महाराज जी कहते हैं कि मैं पत्ते–पत्ते में, कण–कण में, जर्रे–जर्रे में रहता जरूर हूँ, लेकिन उन के अन्दर मेरी इस प्रकार की परछांई है इस प्रकार का वास है जिस प्रकार दूध में घी, मेंहदी में लाल रंगत, गन्ने में मिठास, संतरे में खटास और मिठास है। निचोड़ने पर पता चलता है। चूसने पर मालूम होता है। मेंहदी को रगड़ कर पता चलता है। दूध को दही बना कर बिलोने से मक्खन मिलता है। इसी प्रकार परमात्मा को खोजने पर ही पता चलता है कि परमात्मा कौन है? बहुत बड़े–बड़े अवतार धरती पर आये, पैगम्बर आये, बहुत से देवी–देवता आये, अनेकों ऋषि–मुनि आये, आज तक किसी ने परमात्मा का भेद नहीं बताया। हम लोग भेड़ों की तरह पीछे लगे रहे, नतीजा एक ही रहाः–

तेरा वरनु न जापै, रूपु न लखीऐ,
तेरी कुदरति कउनु बीचारे॥
जलि थलि महीअलि रविआ स्रब ठाई,
अगम रूप गिरधारे॥

आदि गंथ पृष्ठ-670

❋❋❋

जब-जब भी धरती पर जुल्म हुआ, पाप हुआ, परमात्मा ने अनेकों रूप धारण किये। न परमात्मा हिन्दु है, न परमात्मा सिख है, न परमात्मा मुसलमान है, न परमात्मा ईसाई है। परमात्मा केवल "परमात्मा" है। हम सब उसकी खलकत हैं। हम सब उसके "मनुष्य" हैं।

मानस की जात सबै एकै पहिचानबो॥

(अकाल उसतति)

❋❋❋

दशमेश साहब भी यही कहते हैं। प्रह्लाद की रक्षा करने के लिए परमात्मा ने चींटी का रूप धारण किया। "नरसिंह" का रूप धारण किया। शरीर मनुष्य का और मुख, चेहरा शेर का धारण किया। उसने अपना रूप पूरी तरह कभी नहीं दिखाया। जिस रूप में भी आज हमारे सामने कवियों की कल्पना आ रही है, हम उसी प्रकार ही परमात्मा को मानते हैं। कभी भी हमने परमात्मा की असलियत और हकीकत को जानने की कोशिश नहीं की। हम उसके बंदों से प्रेम नहीं करते, उसकी तस्वीरों से प्रेम करते हैं। उसके बंदों की सहायता नहीं करते। परमात्मा के आगे कढ़ाह प्रसाद तथा और भी अनेकों प्रकार की चीजों का भोग चढ़ा देंगे लेकिन उसके बंदों को कभी कोई कपड़ा तक नहीं देते। परमात्मा के लिये, या परमात्मा के नाम पर सब कुछ दे देना है। यह हमारी कमजोरी है, और हमारी बेसमझी है। हम पहले भी शुरू में अर्ज कर चुके हैं कि वह किसी भी प्रकार की वस्तुओं का भूखा नहीं है। न वह "तन" का भूखा है, न वह "मन" का भूखा है, न वह "धन" का भूखा है। वह आपके "प्रेम" का भूखा है। आप एक बार पुकारें, वह आपको दस बार पुकारता है। आप उसकी ओर एक बार चलो, वह आपकी ओर दस बार चल कर आता है। जब आप उसकी ओर चलेंगे, तब आपको पता चलेगा कि परमात्मा आपकी क्या सहायता करता है।

साई मति, साई बुधि सिआनप,
जितु निमख न प्रभु बिसरावै।
संतसंगि लगि एहु सुखु पाइओ,
हरि गुन सद ही गावै॥

आदि ग्रंथ–पृष्ठ–978

❋❋❋

गुरू साहब फिर हमें अपने सुन्दर उपदेश के द्वारा समझा रहे हैं, कि जिस प्रकार आप देखते हैं, कि खोटा पैसा काम आ जाता है। लेकिन कोई भी शाहुकार अपनी तिजोरी में खोटा पैसा नहीं रखता। हमेशा ही अच्छी currency रखता है। इसी प्रकार जो आपके खोटे कर्म हैं, वह आपके अन्दर नहीं रहते, वह बाहर आ जाते हैं। उनके द्वारा आप बाहर सजाएं भुगतते हैं। जेल, अस्पताल, शरीर का कोढ़ी हो जाना, अँधापन, और भी कई प्रकार के शारीरिक रोग आपको मिलते हैं वह आपके बुरे कर्मों का फल है। आत्मा का इससे कोई संबंध नहीं है। यही हमें महाराज जी समझा रहे हैं कि जो काम किया, उसका फल जरूर मिला। यदि आप कहें कि काम हमने यह किया, फल हमें यह मिले, तो यह हमारी अपनी बाहर की बात है अन्दर की बात नहीं है। इसलिये जो संत, जो महापुरूष अपने अन्दर जाते हैं, अन्दर का सफर कर लेते हैं, वह हमें कभी भी किसी condition में नहीं लाते। कोई परहेज हमें नहीं बताते। उनका परहेज यह है जिनसे हमारी दैत्य बुद्धि समाप्त होती है। जिस प्रकार हम शराब, अंडा, मीट, मछली, बंद करते हैं। यह परमात्मा के लिए कोई रूकावट नहीं है यह आपके शरीर के रोग हैं। आपके अन्दर विकार पैदा होंगे। मिट्टी के ऊपर मिट्टी डालोगे तो ढेर बन जाएगा। आग के ऊपर तेल डालोगे वह और भड़क उठेगी। इसी प्रकार जो शराब मीट है यह भी शारीरिक रोगों को पैदा करता है। यदि आप इन्हें खायेंगे तो परमात्मा को कोई फर्क नहीं पड़ेगा। इसका फर्क आपको पड़ना है। इसलिए आप लोगों के लिए यह बन्दिश है। बाकी, परमात्मा के घर जाने के लिए कोई रूकावट नहीं है। हिन्दु बन कर जाओ, सिख बन कर जाओ, मुसलमान बन कर जाओ, ईसाई बन कर जाओ, गेट एक ही है जिसे हम दसवां द्वार कहते हैं। वहाँ यह नहीं है कि आप सिख हैं, पहले आ जाओ, हिन्दु बाद में आयेगा। यह हमारे बाहरी फिरका परस्ती है। हमारे चलाये हुए बाहरी सिक्के हैं। जिनकी कोई कीमत नहीं है। मोहम्मद तुगलक को आठ पहर के लिए राज मिला उसने चमड़े का सिक्का चला दिया। यह

हमारे अपने–अपने बाहरी विचार हैं। परमात्मा का इससे कोई संबंध नहीं है। न परमात्मा ने अपना इस प्रकार का नाम कभी रखा है, कि मैं हिन्दु हूँ, मैं सिख हूँ, मैं मुसलमान हूँ, मैं ईसाई हूँ। न परमात्मा ने कभी अपनी जुबान से ही कहा है। गुरू नानक साहब आये, उन्होंने इन चीजों का खंडन किया है। भाई गुरदास जी वाणी के द्वारा हम सब को समझाते हैं कि:–

गंग बनारस हिंदूआ, मुसलमाणा मका काबा।

बार–24, पउड़ी–4

❋❋❋

हिन्दु अपने तीर्थ स्थान (बनारस) पर गंगा स्नान करके कहते हैं कि हमने बहुत अच्छा कर्म किया है। मुसलमान मक्के जा कर। परमात्मा ने हमें एक नई रौनक दी, नया स्वरूप दिया, नई चाल–ढाल दी, लोगों के भले के लिए, यह माया, यह रूप सजाया। हम लोग आज अपना personal अहंकार, personal जायदाद लेकर बैठ गए हैं। इसलिए महाराज जी ने कहा है कि यह नहीं, साधन एक ही है आप केवल एक मनुष्य हैं। पाँच तत्व के बने हैं और पाँच तत्वों के बिना आप परमात्मा को नहीं मिल सकते। हालाँकि चींटी, कीड़ा, शेर, हाथी, बाघ जो कुछ भी बनाया है, परमात्मा ने स्वयं बनाया है। सब में परमात्मा का वास है। हम लोग बाहरी ज्ञान में उलझ कर बाहर ही भटक कर अपने आप को तबाह कर रहे हैं। जिसका हमारे लिए, हमारी सन्तान के लिए, हमारे किसी सगे–संबंधी के लिए कोई benefit या लाभ नहीं है।

जाति अजाति जपै जनु कोइ॥
जो जापै तिस की गति होइ॥
हरि का नामु जपीऐ साधसंगि॥
हरि के नाम का पूरन रंगु॥

आदि गंथ पृष्ठ–1150

❋❋❋

गुरू साहब हमें फिर समझा रहे हैं कि हम लोग जात–पात में, मजहब कौम में फँसे हुए हैं। परमात्मा ने हमें "पंगत" और "संगत" दी है, हमारी जात–पात परमात्मा के घर में कबूल नहीं होनी है। केवल हमारे सगे–संबंधियों के अन्दर है उन्हें हम पूरा करते हैं। इनसे

हमें बाहर की शोभा मिलती है लेकिन परमात्मा की ओर से हमें इसका कोई फल नहीं मिलता, न ही कोई शोभा मिलती है। जिन्होंने भी अपनी जात-पात को मुख्य रखा है:-

नीच नीच सब तरि गये, संत चरन लौलीन॥
जातहिं के अभिमान से, डूबे बहुत कुलीन॥

संत तुलसी साहब

❋❋❋

बड़ी-बड़ी जातों वाले भी तबाह हो गए उनकी कब्रों पर दीया जलाने वाला कोई नहीं है इसलिए हमें इन जात-पात के झगड़े में न उलझकर परमात्मा की जात का ध्यान रखना चाहिए। जो हमें उसने बना कर यहाँ भेजा है वह है "मनुष्य," "आदमी" या "बंदा"। खून एक है। सबमें लाल रंग का खून है। यह नहीं कि केवल मनुष्यों में ही लाल रंग का खून है, जानवरों में से भी लाल रंग का खून ही निकलता है। कभी भी नीला या पीला नहीं निकला।

लाल रंगु तिस कउ लगा जिस के वडभागा॥
मैला कदे न होवई नह लागै दागा॥

आदि ग्रंथ पृष्ठ-808-9

❋❋❋

परमात्मा ने जो भी चीज creat की है लाल रंग की है। शारीरिक तौर पर, जिन में जान डाली है उनमें लाल रंग है, जिनमें जान नहीं डाली, उनमें सफेद रंग है, किसी भी पेड़ को चीर कर देख लें, सब्जी को काट कर देख लें, आपको पानी मिलेगा। उसमें कभी कोई दूसरा पानी "काला" पानी, या "नीला" पानी नहीं निकलता। उसका सफेद रंग, उसके "अमन" का है, और लाल रंग "बहादुरी", "शूरवीरता" का है। बाहरी पोशाकें जो हम पहनते हैं यह हमारी बाहरी सजावट है। इसलिए हमें इनमें नहीं उलझना चाहिए। हमें परमात्मा का ध्यान रखना चाहिए।

नानक नाम चढ़दी कला
तेरे भाणे सरबत दा भला॥

You've Just Finished your Free Sample

Enjoyed the preview?

Buy: https://store.prowesspub.com